कोलकाता केंद्र में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

मारीशस में वोट व नोट की भाषा है हिंदीः राज हीरामन

कोलकाता। मारिशस के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार राज हीरामन ने कहा है कि मारीशस में हिंदी वोट और नोट की भाषा है। श्री हीरामन आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

के कोलकाता केंद्र में मारीशस व हिंदी का अंतर्संबंध पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मारीशस में भारतीय मूल के लोगों के लिए हिंदी मां है और भोजपुरी नानी। मारीशस में हिंदीवालों की आबादी अधिक है इसीलिए सत्ता में उनकी भागीदारी है। हिंदी जाने बगैर वहां सत्ता नहीं हासिल की जा सकती। हिंदी वहां रोजगार की भाषा है। मारीशस में हिंदी के खिलाफ लोग एक शब्द भी नहीं सुन सकते। राज हीरामन ने कहा कि हिंदी के लिए मारीशस वालों को बहुत संघर्ष करना पड़ा। राजनीति में हिस्सा लेने तथा हिंदी में वहां शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा गांधी जी ने 1901 में मारीशस की अपनी यात्रा के दौरान दी थी। उसके बाद वहां के भोजपुरीभाषी हिंदी पढ़ने लगे।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए हिंदी के वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह ने कहा कि कहीं और से हिंदी भले चली जाए, मारीशस में रहेगी। मारीशस के दिल में हिंदी ने अपनी जगह बनाई है। भारत भी हिंदी के बगैर नहीं रहेगा। संगोष्ठी को डा. सत्यप्रकाश तिवारी, पूजा शुक्ल तथा मदालसा मणि त्रिपाठी ने भी संबोधित किया। आरंभ में हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत भाषण किया।

इस अवसर पर हिंदी विश्वविद्यालय की ओर से राज हीरामन का सम्मान किया गया। केदारनाथ सिंह ने अंगवस्त्रम ओढ़ाकर तथा स्मृति चिह्न देकर राज हीरामन का सम्मान किया। राज हिरामन की हिंदी में अब तक बीस से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें प्रमुख हैः काव्य-संग्रह : 1. कविताएँ जो छप न सकीं, 2. छप न सकीं कविताएं, 3.

हँसते काँटे, 4. चुभते फूल, 5. अँधेरे का उजाला, 6. उजाले कख अँधेरा, 7. एक ज़मीन आसमान पर, 8. धरती तले आकाश, 9. नेहा की निधि, 10. नम मेरी आँखें, कहानी-संग्रह : 11. स्वघोषित आचार्य, 12. सेवा आश्रम, 13. बर्फ सी गर्मी, लघुकथा-संग्रह : 14. कथा-संवाद, 15. घाव करे गंभीर, साक्षात्कार : 16. पराये जो थे अपने हो गए, निबंध-संग्रह : 17. मोहनदास की नज़रों में मॉरीशस भी था, 18. मॉरीशस: हिंदी का और एक देश,19. धनदेव बहादुर : एक बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, 20. मेरे आते-जाते पत्र।

Caption

कार्यक्रम में बाएं से पूजा शुक्ल, सत्यप्रकाश तिवारी, राज हीरामन को स्मृति चिह्न देते केदारनाथ सिंह तथा सबसे दाएं डा. कृपाशंकर चौबे